पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/2015-17 प्रकाशित: 16.06.2017 इस अंक का मल्य 2 रुपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-110007, चलभाष : 9810117464, 9868002130

केरल में हुई गौ हत्या की घटना की आर्य समाज कड़ी निन्दा करता है, केन्द्र सरकार से मांग है कि पूरे देश में गौ हत्या पर प्रतिबन्ध लगाया जाये व दोषी लोगो के विरूद्व कठोर कार्यवाही की जाये

वर्ष-34 अंक-02 आषाढ़-2074 दयानन्दाब्द 193 16 जून से 30 जून 2017 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 16.06.2017, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय आर्य युवक शिविर का 290 युवकों से शुभारम्भ

संस्कारवान युवाओं से ही होगा राष्ट्र का भविष्य उज्जवल —ठाकुर विक्रम सिंह

चरित्रवान—देश भक्त युवाओं का निर्माण राष्ट्र की सबसे बड़ी आवश्यकता —डा.अनिल आर्य, राष्ट्रीय अध्यक्ष

ऐमिटी इन्टरनेशनल स्कूल के सुन्दर समागार में मंच पर बाये से—महामंत्री महेन्द्र भाई, राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.अनिल आर्य, मुख्य अतिथि ठाकुर विक्रम सिंह, डा.जयेन्द्र आचार्य,एस.सी.ग्रोवर । द्वितीय चित्र में—ठाकुर विक्रम सिंह का अभिनन्दन करते डा.अनिल आर्य, डा. जयेन्द्र आचार्य, रामकुमार आर्य, वेदप्रकाश आर्य व प्रवीन आर्य।

नोएडा। शनिवार, 10 जून 2017, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, नई दिल्ली के तत्वावधान में आठ दिवसीय ''राष्ट्रीय आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर'' का ऐमिटी इन्टरनेशनल स्कूल, सैक्टर—44, नोएडा में ऐमिटी के संस्थापक अध्यक्ष डा.अशोक कुमार चौहान व चेयरपरसन डा.अमिता चौहान के सान्निध्य में शुभारम्भ हो गया। शिविर में 290 किशोर व युवक आठ दिन तक योगासन, दण्ड बैठक, लाठी,जूडो—कराटे, स्तूप, बांक्सिग, लेजियम, डम्बल, आत्म—रक्षा प्रशिक्षण, नेतृत्वकला, भाषण कला, पुरातन भारतीय संस्कृति, संध्या—यज्ञ, नैतिक शिक्षा, देश भक्ति की भावना आदि का प्रशिक्षण प्राप्त करेगे।

शिविर का उद्घाटन ठाकुर विक्रम सिंह (अध्यक्ष,राष्ट्र निर्माण पार्टी) ने ओ३म् ध्वज फहरा कर किया। ठाकुर विक्रम सिंह ने कहा कि संस्कारवान व्यक्ति ही राष्ट्र का आधार स्तम्भ होते है, जो आने वाली पीढ़ी का मार्ग प्रशस्त करते हैं। समाज ऐसे ही कर्मशील व्यक्तियों का अनुसरण करके अपना मार्ग तय करता है। बिना संस्कारों के व्यक्ति ऐसा है जैसे आत्मा विहीन शरीर। उन्होंने कहा कि आर्य युवक परिषद् डा. अनिल आर्य के कुशल नेतृत्व में युवा निर्माण का शुभ कार्य पिछले अनेक वर्षो से कर रही है, मैं इसके लिए इन्हें व इनकी पूरी टीम को बधाई देता हूँ आप नयी पौध का निर्माण कर रहे हो।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.अनिल आर्य ने कहा कि आज के वातावरण में जब अपने ही देश में देशद्रोही नारे सुनाई देते हैं तो चिन्ता हो जाती है कि आज का युवा कहां जा रहा है, ऐसे समय में इन चरित्रवान शिविरों का महत्व ओर अधिक बढ़ जाता है, जिससे देश भक्त ओर चरित्रवान युवा तैयार हो सकें जो राष्ट्र निर्माण में अपनी जिम्मेदारी निभायें। 11 जून क्रांतिकारी अमर शहीद पं.रामप्रसाद बिस्मिल का जन्मोत्सव है,ऐसे वीरों के बलिदान से ही भारत आजाद हुआ, आजादी चर्खे तकली से नहीं आयी अपितु इसके लिये हजारों लोगों ने अपना बलिदान दिया, आज की युवा पीढ़ी को आजादी की कीमत समझकर व उसकी रक्षा का संकल्प लेना होगा।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष श्री मायाप्रकाश त्यागी ने दीप प्रज्जवलित किया,उन्होंने कहा कि ''ओ३म्'' की पावन पताका पूरे विश्व को त्याग और बलिदान का सन्देश देती है ओर उसका भगवा रंग जीवन की सर्वोत्कृष्ट बुलन्दियों का परिचायक है जहां सब इच्छायें समाप्त हो जाती हैं। वैदिक विद्वान डा.जयेन्द्र आचार्य ने कहा कि आज नैतिक मूल्यों का निरन्तर हास हो रहा है,परिवार टूटते जा रहे हैं क्योकि समाज का आधार सामाजिक, सांस्कृतिक मूल्य ही आज समाप्त होते जा रहे है ऐसे समय में ऐसे चरित्र निर्माण शिविरों का आयोजन वास्तव में एक आशा की किरण के समान हैं जो हमारी सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा करेगा। उन्होंने पं.रामप्रसाद बिस्मिल के जीवन चरित्र पर मार्मिक रूप से प्रकाश डाला। परिषद् के राष्ट्रीय महामंत्री महेन्द्र भाई ने कहा कि आज समाज के सामने (शेष पृष्ठ 3 पर)

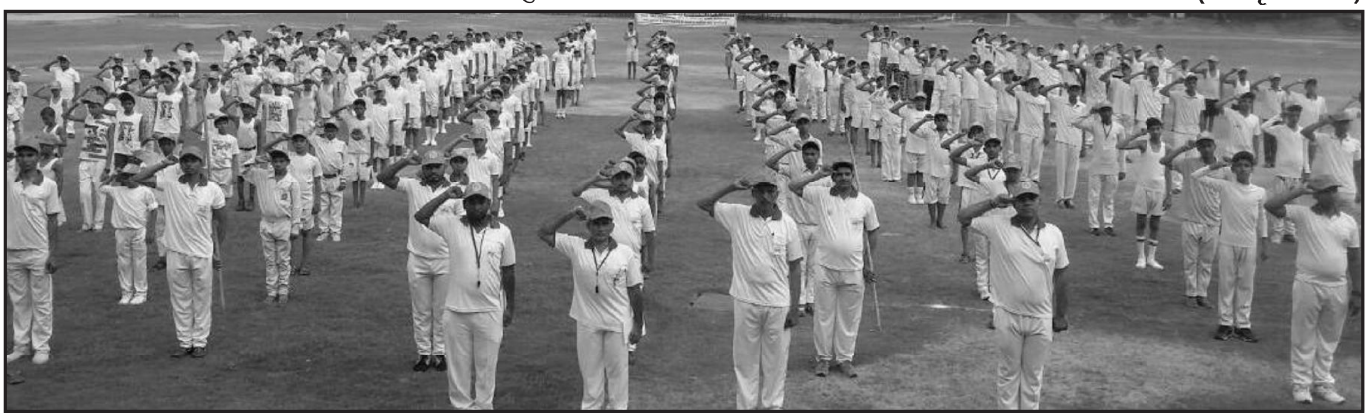

हम मस्तों में आन मिले कोई हिम्मत वाला रे, आर्य समाज में नयी युवा शक्ति ले रही है अंगडाई

माता के समान हितकारी गाय की रक्षा करना मनुष्य मात्र का परम कर्तव्य व धर्म

— मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

संसार के जितने भी देश है या यह कहिये कि पृथिवी तल पर जहां–जहां भी मनुष्य है, वहां–वहां गाय भी विद्यमान है। यह व्यवस्था ईश्वर ने मनुष्यों के हितों को देखकर की है। यदि उसे मनुष्य का हित करना अभीष्ट न होता तो ईश्वर गाय को बनाता ही नहीं। मनुष्यों को अपने हित व स्वार्थपूर्ति के लिए गाय की आवश्यकता है, गाय को मनुष्यों की आवश्यकता नहीं है। बिना गाय के मनुष्य का जीवन जल व वायु रहित जीवन के समान होता। गाय एक पालतू पशु है। यदि हम संसार के सभी पशुओं की गणना कर उनसे मनुष्य जीवन को होने वाले लाभों की दृष्टि से तुलना करें तो यह पायेंगे कि सभी पशुओं में गाय ही ऐसा प्राणी है जो मनुष्य के जीवन को चलाने, बढ़ाने, बुद्धि को तीव्र व सूक्ष्म बनाने तथा रोगों से दूर रखने में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस दृष्टि से अन्य पशुओं का योगदान गौण है। मां के दूध की तरह गोमाता का दूध भी मनुष्यों के लिए पूर्ण आहार होता है। बच्चा हो या युवा अथवा वृद्ध, गाय का दूध सभी आयु वर्ग के लोगों के लिए उपयोगी, क्षुधा को दूर करने वाला, स्वास्थ्यवर्धक, बलवर्धक, आरोग्यकारक, आयुवर्धक, बुद्धिबल विस्तारक, मनुष्य, समाज व राष्ट्र की अर्थव्यवस्था को सुदृण करने वाला आदि अनेकानेक गुणों से युक्त है। यदि संसार में गाय न होती तो हमें लगता है कि संसार में मनुष्य भी न होता कारण कि तब कृषि के लिए बैल व खाद कहा से मिलते? मनुष्य व गाय, दोनो एक दूसरे पर आश्रित हैं। गाय के इन्हीं गुणों के कारण वेदों में गोरक्षा पर पर्याप्त शिक्षायें, विचार व ज्ञानयुक्त कथन मिलते हैं। वेद गो को विश्व की माता बताने के साथ इसे विश्व की नाभि भी घोषित करते हैं। गो–हत्यारों के लिए मृत्यु दण्ड का प्राविधान करते हैं। यह व्यवस्था ईश्वर की, वेद ईश्वरीय ज्ञान होने के कारण, है न की अल्पज्ञ व मलिन बुद्धि के मनुष्यों की। आश्चर्य होता है कि कोई विवेकशील व अल्पज्ञानी मनुष्य ऐसे उपयोगी पशु की हिंसा की वकालत व उसके मांस को भक्ष्य मानने की मूर्खता भी कर सकता है? फिर यह है इसलिए संसार का इससे बड़ा आश्चर्य और कुछ नहीं हो सकता। अपवित्र बुद्धि के लोगों में ही गोहत्या एव उसके मांस के भक्षण की इच्छा हो सकती है। जो भी गाय का मांस खाता है वह ईश्वर व मनुष्य की जीवात्मा के स्वरूप व कर्मफल विधान से पूरी तरह अनभिज्ञ है और यह अनभिज्ञता उसे मूर्ख व अज्ञानी सिद्ध करती है।

वैदिक धर्म में चेतन देवताओं में, ईश्वर के बाद, माता का स्थान आता है। ऐसा क्यों है व इसके पीछे क्या रहस्य वा तर्क हैं? माता बच्चे की जीवात्मा को अपने गर्भ में रखकर उसके शरीर के निर्माण में सहायक होती है और उसे जन्म देने के साथ उसका लालन व पालन भी करती है। यह कार्य किसी सन्तान के प्रति केवल जन्मदात्री मां ही करती है, अतः माता का स्थान किसी भी सन्तान के लिए सर्वोपरि होता है। गाय गोदुग्ध, गोमूत्र व गोबर प्रदान करती है। गोदुग्ध से दही, घृत, मक्खन, मट्ठा, पनीर, खीर, स्वादिष्ट व्यंजन व मिठाईयां आदि अनेक पदार्थ बनते हैं जो मनुष्य के लिए स्वास्थ्यवर्धक होने के साथ उसकी क्षुधा वा भूख को मिटाते हैं। गोदुग्ध का स्थान अन्न के समान व उससे भी ऊपर है, कारण यह है कि गोदुग्ध पूर्ण आहार है जबकि अलग–अलग अन्न में अपने–अपने विशिष्ट गुण होते हैं और उसे स्वतन्त्र वा अकेले न खाकर अन्य पदार्थों घृत, तेल, नमक, मिर्च, मसाले आदि मिलाकर व उन्हें रसोईघर में पकाकर सेवन किया जाता है जिसके लिए रसोई के नाना प्रकार के सामानों चूल्हे, ईधन, बर्तनों आदि की आवश्यकता होती है। गोदुग्ध ऐसा पूर्ण आहार है जिसे बिना किसी अन्न व रसोई आदि के सामान की अनुपस्थिति में भी सेवन करके स्वस्थ व बलवान रहा जा सकता है। हमारी माताओं का शरीर जिसमें ईश्वर सन्तान का निर्माण करते हैं, उसे भी जिन खाद्य पदार्थ अर्थात् भोजन की आवश्यकता होती है उसकी पूर्ति भी गोदुग्ध व इससे बने पदार्थों से हो जाती है। इस विषय में यह भी कह सकते हैं कि अन्न व फलों की तुलना में गाय व गोदुग्ध आसानी से बारह महीनों व वर्ष के 365 दिन उपलब्ध होता है। माता व सन्तान के शरीरों व उसके प्रत्येक अंग की रचना में गोदुग्ध का महत्वपूर्ण स्थान है। यदि गोदुग्ध न होता तो माता, पिता, सन्तान व अन्य मनुष्यों के शरीर भी न होते। अतः माता व सन्तान दोनों को जीवन देने का काम गोमाता व उसका दुग्ध करता है। इस दृष्टि से गो एक पशु न होकर हमारी जन्मदायिनी माता के समान व उससे भी कई बातों में कुछ अधिक ही सिद्ध होती है। यही कारण है कि वेदों से लेकर हमारे महाप्रज्ञा के धनी ऋषियों ने गो व गोदुग्ध की महत्ता गाई है और गो को अवध्य कहने के साथ गोहत्यारों के गोहत्या के अधम कृत्य के लिए मनुष्य हत्या के समान पाप मानते हुए उसे मार देने का विधान किया है। यह विधान गोमाता के महत्व की दृष्टि से उचित ही है। यहां यह भी विचारणीय एवं जानने योग्य है कि गाय से हमें उसके बच्चे गाय व बैल भी मिलते हैं। गाय से गोदुग्ध आदि अमृत तुल्य आरोग्य एवं बल वर्धक पदार्थों की प्राप्ति होती है तो बैल हमारे खेतों में हल के द्वारा जुताई व बुआई में सहायक होते हैं जिससे हमें भरपूर अन्न तो मिलता ही है साथ ही कृषि के लिए सर्वोत्तम व बिना मूल्य का खाद बैल का गोबर व मूत्र भी मिलता है जो खाद के साथ कीटनाशक का कार्य भी करता है। यह सब उपलब्धियां बिना मूल्य एक गाय से हमें होती हैं।

ऋषि दयानन्द ने देश में सबसे पहले गोरक्षा का कार्य किया और गोहत्या बन्द करने की मांग की थी। इसके लिए उन्होंने एक आन्दोलन भी किया था और गोहत्या बन्द करने के लिए एक मैमोरैन्डम तैयार किया था जो इंग्लैण्ड की महारानी विक्टोरिया को सम्बोधित था। उनका प्रयास था कि देश के करोड़ों लोगों के हस्ताक्षर कराकर इसे वह महारानी विक्टोरिया को भेजेंगे। कार्य तीव्र गति से चल रहा था। लाखों वा करोड़ो लोगों के हस्ताक्षर करा लिये गये थे और कुछ करने शेष थे। इसी बीच उनके विरोधियों ने विष देकर उनका जीवन समाप्त कर दिया। इससे हानि यह हुई कि गोरक्षा, गोसंवर्धन वा गोहत्या बन्दी का काम बीच में अधूरा ही छूट गया। यह भी बता दें कि गांधी जी भी गोरक्षा के प्रबल समर्थक थे। उनका यंग इण्डिया में गोरक्षा के समर्थन और गोरक्षा के विरुद्ध लिखा गया लेख उपलब्ध है जिसमें उन्होंने गोरक्षा के विरोधियों के प्रति कठोर कार्यवाही का समर्थन किया है। अतः यदि ऋषि दयानन्द कुछ और वर्ष जीवित रहते या गांधी जी जीवित रहे होते तो अनुमान है कि वह देश में गोहत्या तो किसी कीमत पर न होने देते। हम यह भी बता दें कि स्वामी दयानन्द ने अपनी पुस्तक गोकरुणानिधि में गाय से होने वाले आर्थिक लाभों की गणना कर सिद्ध किया है कि गोरक्षा देश की खाद्यान्न सुरक्षा की गारण्टी है। सभी देशवासियों को इसे निष्पक्ष भाव से पढ़ना चाहिये।

संसार में मांसाहार इस लिए भी बढ़ रहा है कि मांसाहार करने वाले लोगों को मांसाहार के सभी पहलुओं व हानियों का ज्ञान नहीं है। जो लोगों पढ़े लिखे व समझदार हैं वह विवेक की कमी, अपनी जीभ के स्वाद व कुछ धार्मिक व अन्य कारणों से इसका प्रचार नहीं करते और न ही आम जनता के सामने सत्य पक्ष को रखते हैं। कई मतों ने इसे अपने धर्म से भी जोड़ रखा है जिसका कारण उनके मतों में इसके पक्ष में कुछ उल्लेख मिलते हैं जो मांसाहार के पोषक हैं। हमारी दृष्टि में उन उल्लेखों को आपद धर्म मानकर मांसाहार को सर्वथा छोड़ देना चाहिये। जब साधारण व अज्ञानी मनुष्यों पर प्राण रक्षा का संकट आ जाये तो उस समय वह अपने जीवन की रक्षा के लिए अभक्ष्य पदार्थ का सेवन कर लेते हैं परन्तु सामान्य स्थिति में जब अन्य भक्ष्य पदार्थ प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हों, तब मांसाहार करना रोगों सहित अल्पायु को आमंत्रित करने के साथ कर्मफल सिद्धान्त के अनुसार जन्म–जन्मान्तर में पशुओं के समान जीवन व पीड़ा का भोग कराने वाला होगा। परजन्मों में हमारी स्थिति वैसी ही होगी जैसी की इस जन्म में हमारे निमित्त से अन्य प्राणियों की हुई है। हम समझते हैं कि यदि संसार के सभी लोग ज्ञानी व बुद्धिमान होते और उन्होंने वैदिक धर्म के सिद्धान्तों व उसकी युक्तियों सहित लाभ व हानि को जाना व समझा होता तो वह पवित्र बुद्धि होकर गोहत्या व गोमांसाहार में प्रवृत्त होने का निन्दित कर्म कदापि न करते। हम मांसाहार नहीं करते व हमने जीवन में इसे छोड़ दिया इसका कारण केवल हमारा ज्ञान व विवेक है। यही ज्ञान व विवेक इतर मत–मतान्तरों व लोगों में भी होता तो वह हमारी ही तरह गोरक्षा के समर्थक और गोहत्या व गोमांस के विरोधी होते। यहां भी मत–मतान्तरों की कुछ शिक्षायें व मनुष्यों का अविवेक ही इस समस्या के मूल में ज्ञात होता है।

आर्यसमाज के संस्थापक, वेद और वैदिक साहित्य के द्रष्टा ऋषि दयानन्द ने एक लघु ग्रन्थ 'गोकरुणानिधि' की रचना की थी। इसकी गवेषणापूर्ण भूमिका के कुछ अंश यहां प्रस्तुत हैं जो गोरक्षा के महत्व पर प्रकाश डालते हैं। ऋषि दयानन्द लिखते हैं कि 'वे धर्मात्मा, विद्वान लोग धन्य हैं, जो ईश्वर के गुण–कर्म–स्वभाव, अभिप्राय, सृष्टि–क्रम, प्रत्यक्षादि प्रमाण और आप्तों के आचार से अविरुद्ध चल कर सब संसार को सुख पहुंचाते हैं और शोक है उन पर जो कि इनसे विरुद्ध स्वार्थी, दयाहीन होकर जगत् की हानि करने के लिए वर्तमान हैं। पूजनीय जन वो हैं जो अपनी हानि हो तो भी सबका हित करने में अपना तन, मन, धन सब–कुछ लगाते हैं और तिरस्करणीय वे हैं जो अपने ही लाभ में सन्तुष्ट रहकर अन्य के सुखों का नाश करते हैं। वह आगे लिखते हैं कि सृष्टि में ऐसा कौन मनुष्य होगा जो सुख और दुःख को स्वयं न मानता हो? क्या ऐसा कोई भी मनुष्य है कि जिसके गले को काटे वा रक्षा करें, वह दुःख और सुख को अनुभव न करे? जब सबको लाभ और सुख ही में प्रसन्नता है, तब बिना अपराध किसी प्राणी का प्राण वियोग करके अपना पोषण करना सत्पुरुषों के सामने निन्द्य कर्म क्यों न होवे? सर्वशक्तिमान जगदीश्वर इस सृष्टि में मनुष्यों की आत्माओं में अपनी दया और न्याय को प्रकाशित करे कि जिससे ये सब दया और न्याययुक्त होकर सर्वदा सर्वोपकारक काम करें और स्वार्थपन से पक्षपातयुक्त होकर कृपापात्र गाय आदि पशुओं का विनाश न करें कि जिससे दुग्ध आदि पदार्थों और खेती आदि क्रिया की सिद्धि से युक्त होकर सब मनुष्य आनन्द में रहें।'

महर्षि दयानन्द ने एक गाय की एक पीढ़ी से उत्पन्न बछिया और बैलों से होने वाले दुग्ध व अन्न का गणित व अर्थशास्त्र के अनुसार हिसाब लगाया है और सिद्ध किया है कि एक गाय की एक पीढ़ी से 4,10,440 मनुष्यों का पालन एक समय व एक बार के भोजन के रूप में होता है। यदि गाय की उत्तरोतर सन्ततियों पर विचार करें तो गाय से असंख्य मनुष्यों का पालन होता है। गाय का मांसाहार करने से केवल अस्सी मनुष्य एक बार के भोजन के रूप में तृप्त हो सकते हैं। इस पर टिप्पणी करते हुए वह कहते हैं कि 'देखो ! तुच्छ लाभ के लिए लाखों प्राणियों को मार असंख्य मनुष्यों की हानि करना महापाप क्यों नहीं?' गाय के ही समान ऋषि दयानन्द ने भैंस, ऊंटनी व बकरी से मिलने वाले दूध व उससे होने वाले भोजन संबंधी आर्थिक लाभ की गणना कर भी इन पशुओं की रक्षा का भी आह्वान व समर्थन किया है। मनुष्य उसे कहते हैं जो मननशील हो। अपने व दूसरों के सुख, दुःख व हानि लाभ को समझे। यदि मनुष्य ऐसा होगा तो वह न तो गोहत्या करेगा, न गोमांस व अन्य पशुओं का ही मांस खायेगा। हमने निष्पक्ष भाव से यह लेख लिखा है। लोग मानवीय व देश के आर्थिक हितों के दृष्टिकोण से इस पर विचार करें तो उन्हें अपने कर्तव्य का बोध हो सकेगा। हमें यह भी आश्चर्य होता है कि लोग कागज के नोटों व जड़ पदार्थों की रक्षा में तो अपना जीवन व्यतीत करने सहित अपने प्राणों को भी दांव पर लगा देते हैं परन्तु ईश्वर द्वारा हमारे हित के लिए बनाये गये गाय आदि प्राणियों पर निर्दयता का व्यवहार करते हैं। उन्हें किस आधार पर मनुष्य कहें हमें समझ में नहीं आता? इसी के साथ इस लेख को विराम देते हैं।

—196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001, फोनः 09412985121

मध्य प्रदेश प्रान्तीय युवक शिविर सम्पन्न : राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.अनिल आर्य सिहोर पंहुचे

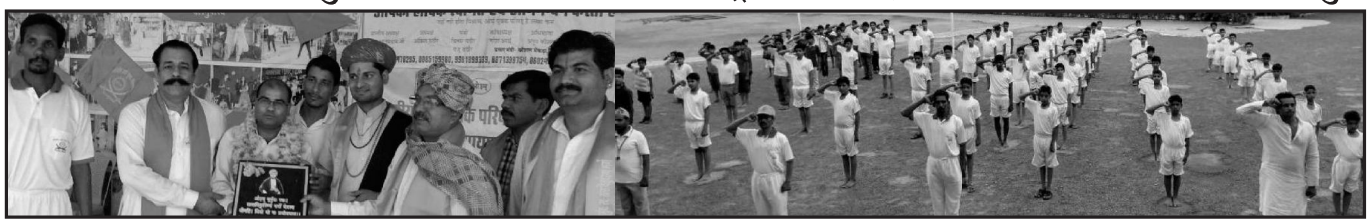

प्रान्तीय अध्यक्ष आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार का अभिनन्दन करते डा.अनिल आर्य,संयोजक विजय राठौर आदि व सामने आर्य युवक मैदान में।

बुधवार, 31 मई से रविवार 4 जून 2017 तक केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् मध्य प्रदेश के तत्वावधान में नूतन हायर सैकेण्डरी स्कूल सिहोर में प्रान्तीय आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ । शिविर में 125 युवकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया । मुख्य अतिथि डा.अनिल आर्य ने केरल में हुई गौ कशी की कड़ी निन्दा करते हुए केन्द्र सरकार से गौ हत्यारों को कड़ी सजा देने की मांग की व शिविर आयोजन के लिये बधाई प्रदान की । प्रान्तीय अध्यक्ष आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार ने कुशल संचालन किया । कर्मठ संयोजक विजय राठौर,अविनाश आर्य आदि भी उपस्थित थे।

आर्य समाज राजनगर गाजियाबाद में आर्य वीरांगना शिविर में 160 बालिकायें प्रशिक्षित

आर्य समाज राजनगर, गाजियाबाद में दिनांक 4 जून से 11 जून 2017 तक आर्य कन्या शिविर आयोजित किया गया। चित्र में—महापौर आशु वर्मा,विधायक सुनील शर्मा, समारोह अध्यक्ष डा.अनिल आर्य को सम्मानित करते श्री श्रद्धानन्द शर्मा, सत्यवीर चौधरी व प्रवीन आर्य व सामने आर्य वीरागंनायें। परिषद् के शिक्षक सौरभ गुप्ता व हरिसिंह आर्य के निर्देशन में मनीषा, प्रगति, नेहा, तबुस्म खान, पूनम, चंदा ने प्रशिक्षण प्रदान किया। श्री ओमप्रकाश आर्य, डा.आर.के.आर्य, ज्ञानेन्द्र आर्य आदि भी उपस्थित थे।

फरीदाबाद में युवक निर्माण शिविर सोल्लास सम्पन्न

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् फरीदाबाद के तत्वावधान में दिनांक 4 जून से 11 जून 2017 तक आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर श्रद्धा मन्दिर स्कूल, सैक्टर—87, फरीदाबाद में डा. गजराजसिंह आर्य के सान्निध्य में सोल्लास सम्पन्न हो गया। शिविर में 70 युवकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। चित्र में—डा. अनिल आर्य व श्री वजीरसिंह डागर (प्रधान, आल ऐस्कॉर्टस एम्पलाईज यूनियन) का अभिनन्दन करते प्रान्तीय महामंत्री वीरेन्द्र योगाचार्य, विजय आर्य, विजेन्द्र शास्त्री, जिला अध्यक्ष जितेन्द्रसिंह आर्य, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सत्यभूषण आर्य एडवोकेट, सुधीर कपूर, सत्यपाल शास्त्री व सामने आर्य युवक प्रदर्शन करते हुए। माता विमला ग्रोवर, मदनलाल तनेजा, पी.के.मितल, मकेन्द्र कुमार, राकेश भार्गव, रोजी पण्डित, प्रमोद गुप्ता, राजेश नागर, नरेश नम्बरदार, कमल बजाज, डा.प्रेमपाल आचार्य, सत्यपाल रहेजा, प्रो.डी.पी.सक्सेना, मनोज सुमन उपस्थित थे। वीरेन्द्र योगाचार्य ने कुशल मंच संचालन किया।

करनाल में आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर सोल्लास सम्पन्न

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् करनाल के तत्वाधान में दिनांक 31 मई से 4 जून 2017 तक विशाल आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर आर्य समाज प्रेम नगर, करनाल में सम्पन्न हुआ। शिविर में 125 युवकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। चित्र में—डा. अनिल आर्य का स्वागत करते डा.लाजपतराय आर्य, जगमोहन आनन्द, अर्जुनदेव वर्मा, अजय आर्य, रोशन आर्य, हरेन्द्र चौधरी आदि। प्रान्तीय अध्यक्ष स्वतन्त्र कुकरेजा ने कुशल संचालन किया। स्वामी सम्पूर्णानन्द जी, यशवीर आर्य, विकास चोपडा, शान्तिप्रकाश आर्य, बलबीर आर्य, ओमप्रकाश सचदेवा, सूबेसिंह आर्य, मलखानसिंह आर्य, दिलबाग आर्य आदि गणमान्य उपस्थित थे।

(पृष्ठ 1 का शेष)

चारित्रिक पतन, पाखण्ड, अन्धविश्वास, कन्या भ्रूण हत्या, जातिवाद, आंतकवाद, प्रदूषण आदि अनेकों समस्याऐं मुँह बांये खड़ी हैं उसका निराकरण महर्षि दयानन्द के अनुयायियों को आगे आकर करना है। सरदार सुरेन्द्र सिंह गुलशन (जालन्धर), प्रवीन आर्या (दिल्ली), स्वर्णा आर्या के मधुर भजनों का सभी ने रसास्वादन किया। इस अवसर पर समाजसेवी डा.आर.के.आर्य, बहिन गायत्री मीना, यशोवीर आर्य, एस.सी.ग्रोवर, रविन्द्र मेहता, विनोद त्यागी, सूर्यदेव व्यायामाचार्य, योगेन्द्र शास्त्री, सौरभ गुप्ता, अरूण आर्य, वीना—रामजीदास थरेजा, यज्ञवीर चौहान, प्रवीन आर्य (गाजियाबाद), योगेन्द्र शास्त्री, रामकुमार आर्य, के.एल.राणा, सत्यपाल सैनी, वेदप्रकाश आर्य, अनिल हाण्डा आदि उपस्थित थे। सभी प्रीतिभोज का आनन्द लेकर विदा हुए। इस वर्ष परिषद् की ओर से विभिन्न स्थानों पर 22 शिविर चल रहे हैं ।

किसानों की आत्म हत्या चिन्ता का विषय—डा.अनिल आर्य

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.अनिल आर्य ने देश भर में बढ़ती किसानों की आत्म हत्या की घटनाओं पर चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा कि सरकारों की इच्छा शक्ति के अभाव में आजादी के इतने वर्षो के बाद भी भारत का किसान आत्म हत्या को मजबूर होता है तो यह गहरी चिन्ता ओर सरकारों की विफलता का परिचायक है। डा.अनिल आर्य ने केन्द्र सरकार से मांग की कि आज ऐसी ठोस नीति बनाने व लागु करने की आवयश्कता है जिससे देश का अन्नदाता किसान आत्म हत्या न करे।

पलवल हरियाणा में आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर सम्पन्न

सोमवार, 12 जून से रविवार 18 जून 2017 तक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के तत्वावधान में दयानन्द सी.सैकेण्डरी स्कूल पातली गेट,पलवल में आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। शिविर में 135 युवकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। मुख्य अतिथि डा.अनिल आर्य ने कहा कि शिविर रचनात्मक कार्यक्रम है,सभी आर्य समाजों को इससे जुड़ना चाहिये। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने कुशल संचालन किया। श्रीमती चमेलीदेवी सोंलकी,प्रि.अल्का गुप्ता,जगन डागर,रमेश आर्य,बुधराम आर्य,जितेन्द्र सिंह आर्य,नारायणसिंह आर्य,तुलाराम,पूर्णसिंह राणा,प्रो.जयप्रकाश आर्य,वी.के.आर्य,रामकुमारसिंह आर्य आदि उपस्थित थे। चित्र में–डा.अनिल आर्य का शाल से स्वागत करते चन्द्रशेखर मंगला,कृष्ण कुमार भूटानी आदि।

राजस्थान प्रान्तीय युवक शिविर बहरोड़ में सोल्लास सम्पन्न

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् राजस्थान के तत्वावधान में डी.वी.एम.पब्लिक स्कूल,बहरोड़ में युवक चरित्र निर्माण शिविर सोल्लास सम्पन्न हुआ। शिविर में 132 युवकों ने भाग लिया। चित्र में–मंच पर मुख्य अतिथि डा.अनिल आर्य,श्री विरजानन्द,मा.सत्यस्वरूप आर्य व प्रान्तीय अध्यक्ष रामकृष्ण शास्त्री। सामने आर्य युवक प्रदर्शन करते हुए।

परिषद् का 39वां स्थापना दिवस व आर्य समाज, नोरोजी नगर का उत्सव सम्पन्न

शनिवार, 3 जून 2017,केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् का 39 वां स्थापना दिवस आर्य समाज,कबीर बस्ती,दिल्ली में मनाया गया। पं.दिनेश पथिक के मधुर भजन हुए । चित्र में–पं.दिनेश पथिक का अभिनन्दन करते डा.अनिल आर्य,स्वामी विश्वानन्द जी,महेन्द्र भाई,सुदेश भगत,देवेन्द्र भगत,सुनील खुराना। प्रीतिभोज का सभी के लिये सुन्दर प्रबन्ध किया गया।

श्री प्रदीप गोगिया,रामकुमार आर्य,पार्षद गुडडीदेवी जाटव,नेत्रपाल आर्य,संतोष शास्त्री,वेदप्रकाश आर्य आदि उपस्थित थे। द्वितीय चित्र–आर्य समाज,नौरोजी नगर,नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव सोल्लास मनाया गया। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य महेन्द्र भाई ने यज्ञ करवाया व श्री रविदेव गुप्ता ने अध्यक्षता की, मण्डल के महामंत्री चतरसिंह नागर ने कुशल संचालन किया। चित्र में–श्री प्रकाशवीर शास्त्री का सपत्निक अभिनन्दन करते डा.अनिल आर्य,महेन्द्र भाई,साहिल,वरूण आर्य,स्वदेश कुमार,दीपक आदि।

आर्य नेता रविन्द्र मेहता व शिक्षाविद् सुभाष श्योराण का अभिनन्दन

आर्य नेता श्री रविन्द्र मेहता (88 वर्षीय) का अभिनन्दन करते ठाकुर विकम सिंह, श्री मायाप्रकाश त्यागी, महेन्द्र भाई व यशोवीर आर्य। द्वितीय चित्र–ए.डी.सीनियर सैकेण्डरी स्कूल,डबुवा कालोनी,फरीदाबाद के प्रि.सुभाष शयोराण का अभिनन्दन करते डा.अनिल आर्य,जितेन्द्र सिंह आर्य व रामकुमार सिंह।

समाजसेवी वीना-रामजीदास थरेजा व डा.सुनील रहेजा,सुनीता-वीरेश बुग्गा का अभिनन्दन

समाजसेवी श्रीमती वीना व रामजीदास थरेजा का अभिनन्दन करते ठाकुर विकम सिंह,महेन्द्र भाई,डा.अनिल आर्य,प्रवीन आर्या व गायत्री मीना । द्वितीय चित्र–डा.सुनील रहेजा,श्रीमती सुनीता बुग्गा–वीरेश बुग्गा का अभिनन्दन करते श्री सूर्यदेव व्यायामाचार्य,महेन्द्र भाई,सरदार सुरेन्द्र सिंह गुलशन,ओमप्रकाश डंग।

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970